जहां कोई वापसी नहीं (CH- 15) Detailed Summary || Class 12 Hindi अंतरा

पाठ की मूल संवेदना: –

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने न केवल पर्यावरण संबंधी चिंताओं को रेखांकित किया है, बल्कि विकास के नाम पर पर्यावरणीय विनाश से उत्पन्न होने वाले विस्थापन की मानवीय पीड़ा को भी रेखांकित किया है। लेखक का मानना है कि अंधाधुंध विकास और पर्यावरण सुरक्षा के बीच संतुलन होना चाहिए, नहीं तो विकास हमेशा विस्थापन और पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म देगा और मनुष्य अपने समाज, संस्कृति और पर्यावरण से विस्थापित होकर जीवन जीने को मजबूर होगा।

औद्योगिक विकास के दौर में प्राकृतिक सौन्दर्य किस प्रकार नष्ट हो रहा है, इसका मार्मिक चित्रण इस पाठ में किया गया है। यह पाठ विस्थापितों की अनेक समस्याओं का हृदयस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करता है। यह इस सच्चाई को भी उजागर करता है कि आधुनिक औद्योगीकरण की आंधी में मनुष्य न केवल उखड़ जाता है, बल्कि उसका पर्यावरण, संस्कृति और आवास भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।

जहां कोई वापसी नहीं – पाठ का सार

अमझर शब्द का अर्थ: –

आम के पेड़ों से घिरा एक गाँव, जहाँ आम गिरते हैं। आम के पेड़ तब से सूखने लगे जब से सरकार ने घोषणा की कि अमरोली परियोजना के तहत नवागांव के कई गांवों को नष्ट कर दिया जाएगा। उन पर मायूसी छा गई। यह सही है, अगर एक आदमी को जड़ से उखाड़ दिया जाएगा, तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेगा?

आधुनिक भारत के नए शरणार्थी: –

वे लोग जो औद्योगीकरण के तूफान से हमेशा के लिए अपनी मातृभूमि से अलग हो गए, वही लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहलाते हैं।

प्रकृति और औद्योगिकरण के कारण विस्थापन में अंतर: –

बाढ़ या भूकंप के कारण जब लोग अपने घरों को छोड़कर कुछ समय के लिए सुरक्षित स्थान पर चले जाते हैं और स्थिति सामान्य होने पर अपने घरों को लौट जाते हैं, तो उन्हें प्रकृति के कारण विस्थापित कहा जाता है। जब औद्योगीकरण के विकास के नाम पर लोगों को निर्वाचित गृह भूमि से अलग कर दिया जाता है और ये लोग फिर कभी घर वापस नहीं आ पाते हैं तो उन्हें औद्योगीकरण के नाम पर विस्थापित कहा जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएं: –

यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएं काफी भिन्न हैं। यूरोप में मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखना पर्यावरण का सवाल है, जबकि भारत में संस्कृति के बीच संतुलन बनाए रखने का सवाल है।

सिंगरौली की उर्वरा भूमि अपने लिए अभिशाप: –

सिंगरौली की भूमि इतनी उपजाऊ थी और जंगल इतने समृद्ध थे कि हजारों बनवासी और किसान शताब्दियों से उनकी मदद से अपना भरण-पोषण करते रहे हैं। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय दौलत उनके लिए अभिशाप बन गई, इसलिए सिंगरौली की अपार क्षमता दिल्ली के सत्ताधारीओं और उद्योगपतियों की नजरों से ओझल नहीं हो पाई। अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण बैकुंठ और अकेलेपन के लिए काला पानी माने जाने वाला सिंगरौली अब राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रगति के नक्शे पर आ गया है।

औद्योगिकरण के कारण पर्यावरण संकट: –

यह सच है कि औद्योगिक वातावरण ने संकट पैदा कर दिया है, औद्योगीकरण के कारण लोग गाँव-गाँव जाकर ज़मीन से आज़ाद हो गए हैं। ऐसा करने से वहां का माहौल खराब हो गया, साथ ही मनुष्य और उसका परिवेश भी बर्बाद हो गया है। जिससे प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच संतुलन बिगड़ गया। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित उद्योगों और कचरे ने पर्यावरण संकट पैदा किया। मनुष्य ने प्रकृति और संस्कृति के बीच संतुलन को नष्ट कर दिया है। हमें ऐसी योजनाएँ बनानी होंगी जो इस संतुलन को बनाए रखें और विकास और प्रगति करें।

https://www.evidyarthi.in/